ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

नेहरू और मार्क्सवाद एक ऐतिहासिक विश्लेषण

डा0 ज्योति सक्सेना
एसो0 प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
डी0जी0 कालेज कानपुर

डा0 मंजू जौहरी
एसो0 प्रोफेसर
डी0वी0 कालेज उरइ

19वीं शताब्दी के लगभग यूरोप के श्रमिक और समाजवादी जगत में नया एवं मनमोहक व्यक्तित्व उभरा यह कार्ल मार्क्स था जिसका जन्म 1818 में एक जर्मन यहूदी परिवार में हुआ। उसके अययन–विषय कानून इतिहास और दर्शनशास्त्र थे। उसने अपने सिद्धान्तों को परिपुष्ट किया और फिर उन पर लिखा। नेहरू का कथन है 'वह कोरा अध्यापक या दार्शनिक नहीं था जो बैठा–बैठा मत गढ़ा करता है और दुनिया की बातों से सरोकार न रखता हो जहाँ उसने समाजवादी आन्दोलन की अस्पष्ट विचारधारा का विकास किया ओर उसे स्पष्ट किया और उसके सामने निश्चित और साफ–साफ विचार ओर ध्येय उपस्थित किये वहाँ उसने यूरोप में मजदूरों और उनके आन्दोलनों को संगठित करने में भी क्रियात्मक और प्रमुख भाग लिया।'[1]

मार्क्स के घोषणा पत्र के अग्रिम पृष्ठों में उन्होने अपने सिद्धान्त का प्रतिपादन किया और उसका अन्तिम वाक्य था संसार के ''मजदूर एक हो जाओ''। तुम्हें खोना कुछ नही सिवाय अपनी गुलामी की जंजीर के और पाने के लिये तुम्हारे लिये संसार पड़ा है।[2] मार्क्स की यह अपील नेहरू को भावी कार्यवाही का आवाह्न लगी।

1867 में मार्क्स की महान रचना 'कैपिटल' जर्मन भाषा में प्रकाशित हुयी यह लन्दन में उसकी दीर्धकालीन अध्यवसाय का प्रतिफल थी। 'इससे उसने प्रचलित आर्थिक सिद्धान्तों का विश्लेषण करके उनकी आलोचना की और अपना समाजवादी मत विस्तार के साथ समझाया। मार्क्स का यह नया पूर्ण स्पष्ट और अकाट्य तर्क सम्मत समाजवाद वैज्ञानिक समाजवाद कहलाया।[3]

जेल में नेहरू ने मार्क्स और एंगिल्स के ''कम्युनिस्ट मैनीफैस्टो तथा मार्क्स के प्रसिद्ध ग्रन्थ ''पूंजी'' का अध्ययन किया था तथा मार्क्स की इतिहास की भौतिकवादी तथा वैज्ञानिक व्याख्या ने उन्हें बहुत प्रभावित किया था'' उस समय मार्क्स का तार्किक विवेचन जवाहर लाल को सुस्पष्ट विवेचन लगा था।

पं0 जवाहर लाल नेहरू उस समय मार्क्स से इस बात में भो सहमत दिखयी देते हें कि ''पूँजीवाद तथा उसका साथी साम्राज्यवाद अपने विनाश के बीज अपने आप में ही छिपये हुये हैं।''[4]

नेहरू मार्क्स के वर्ग संघर्ष सम्बन्धी विचारो को स्वीकार करते हें ओर मार्क्स के इन वर्ग संघर्ष सम्बन्धी विचारो को भारत पर लागू करके देखते हुये कहते हैं कि ''भारत में राष्ट्रीय आन्दोलन एक प्रकार का वर्ग

संघर्ष ही है। यह अब तक छिपा हुआ था क्योंकि सरकार दावा करती थी कि भारत में, उसकी हुकूम का आधार न्याय और भारतवासियों की भलाई है मगर अब इसका पर्दाफाश हो चुका है और इसका असली रूप भद्देपन और नंगेपन के साथ प्रकट हो रहा हे। उनका कहना था कि ''आज कोई भी देख सकता है कि संगीनों पर टिके हुये इस साम्राज्य का असलियत क्या है।''[5]

नेहरू वर्ग संघर्ष विचारों से तो सहमत थे और भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन को एक वर्ग संघर्ष ही मानते है, परन्तु उनका विचार था कि मार्क्स की भविष्यवाणी सभी देशों में फैली है। मध्यम वर्गीय समाज और मजदूर वर्ग का अखिरी संघर्ष हो रहा है यह गलत है।

मार्क्स के अनुयाईयों का मत है कि ''वर्ग संघर्ष बल प्रयोग एवं हिंसा का रूप निश्चय ही ग्रहण कर लेता है। शोषित वर्ग के द्वारा शक्ति ग्रहण का सिद्धान्त हिंसा की अनिवार्यता के मूल विचार पर अधारित है'' जैसा कि साम्यवादी घोषणा पत्र में स्पष्ट घोषित किया गया है–शोषितो की उन्नति की विभिन्न स्थितियों को वर्णित करने में हम लोगों ने पाया कि वर्तमान समाज में न्यून मात्रा अथवा विशेष रूप में एक छिपे हुये गृह युद्ध की सम्भावनायें सदैव विद्यमान रहती है, जबकि एक अवसर ऐसा आता है कि जब गृह युद्ध एक खुली क्रान्ति और हिंसक के रूप में प्रस्फुटित हो जाता है। बुर्जुआवादी शक्तियों को समाप्त करने के लिये हिंसा का आश्रम शोषितों के लिये अपरिहार्य है।[6]

पण्डित नेहरू वर्ग के विचार को स्वीकार करते हुयं भी पूँजीवादी एवं शोषित वर्ग के हितों को मध्य टकराव की स्थिति को स्वीकार नहीं करते थे वे यह भी स्वीकार नहीं करते थे कि इस प्रकार की नीति हिंसा या गृहयुद्ध का रूप ग्रहण कर लेती है। उन्होंने कहा मैने जो समस्या का निदान प्रस्तुत किया है कोई आवश्यक नहीं कि उसमें टकराव अथ्वा घृणा ही उत्पन्न होगी।[7]

नेहरू के लिये ''वैज्ञानिक मार्क्सवाद एक नैतिक आकर्षण रखता था।''[8] मार्क्सवाद के प्रति उनका झुकाव उसकी इतिहास भौतिकवाद व्याख्या के कारण था नेहरू कभी इतिहास के छात्र नहीं रहे न वे इतिहासकार थे।[9] परन्तु विश्व इतिहास की झलक को पढ़ने पर वे महान इतिहासकार प्रतीत होते है इतिहास के प्रति गहन आकर्षण उनमें मार्क्सवाद के द्वारा पैदा हुआ था।[10] यह उल्लेखनीय है कि 1930–33 के जेल जीवन में उन्होने मार्क्सवाद का अध्ययन किया और इन्हीं दिनों उन्होने विश्व इतिहास की झलक लिखी।[11] नेहरू अत्यधिक व्यक्तिवादी थे और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता में उनकी बड़ी आस्था थी। किन्तु अपने समाजवादी विचारों में मार्क्स, लेनिन

के प्रभाव में ऐसा दिखायी देता है कि उन्हें शंकाशील बना दिया था कि समाजवाद ओर असीमित स्वतन्त्रता क्यो साथ–साथ चल सकेगें उन्हे स्पष्ट दिखायी दिया–एक जटिल सामाजिक ढांचे में व्याक्तिगत स्वतन्त्रता के अनुशीलन का एक मात्र यही मार्ग है। व्यापक स्वतन्त्रता के हित में न्यून स्वतन्त्रताओं को बहुधा परिसीमन की आवश्यकता हो सकती है।[12] संसर व्यापी महान संकट और मन्दी ने मार्क्सवादी विश्लेषण का औचित्य सिद्ध कर दिया। जब अन्य समस्त व्यवस्थायें एवं सिद्धान्त केवल अपने अनुमान लगा रहे थे तब एक मात्र मार्क्सवाद में ही अधिकाशतः संतोषप्रद रूप से उसके कारण पर प्रकाश डाला और उसका वास्तविक समाधान हमारे सम्मुख रखा।[13]

विश्व इतिहास की झलक और हिन्दुस्तान की कहानी में इतिहास की गम्भीर व्याख्या नेहरू ने मार्क्सवादी दृष्टिकोण से की थी। पूरे देश में एक श्रद्धालु तीर्थयात्री की भंति जब नेहरू जी राजनैतिक दौरों पर निकलते थे तो वे करोड़ो देशवासियो के निकट इस धारणा के साथ जाते थे, कि जनता ही इतिहास की रचना करती है। यही जनता उत्पादन के पिछड़े साधनों के स्थान पर नये उन्नत साधनों का प्रयोग कर इतिहास को नया मोड़ देती है यह धारणा उन्हें जनता की मानसिक स्थिति के साथ एकाकार कर देती थो।[14] नेहरू के केवल घटनाओं और युगों का वर्णन नहीं किया बल्कि विभिन्न युगों और अवस्थाओं का वणन करते समय भारतीय समाज की कृत्रिम विकास की कहानी भी प्रस्तुत की है।[15]

नेहरू ने अपनी मार्क्सवादी व्यापकता तथा भिन्न उद्देश्यों और लक्ष्यों की जटिलता को एक सूत्र में पिरो दिया है और भारत की एसी कहानी प्रस्तुत की है जो एक सामाजिक व्यक्तित्व की कहानी प्रतीत होती है।[16]

नेहरू मार्क्सवाद की इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या से ती सहमत प्रतीत होते हैं परन्तु जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण शत–प्रतिशत मार्क्सवादी नहीं था। अनेक दर्शनिक तथा मुख्य समस्याओं के तत्वों के अलौकिक शक्ति की मान्यता के सम्बन्ध उनका मत संकर वेदान्त की रहस्यवादी स्वरूपों के निकट प्रतीत होता है। उन्होंने एक स्थान पर स्वीकार भी किया है कि वे वेदान्त के अद्वैतमत की सभी गहराईयों से परिचित नहीं है।[17]

नेहरू की विज्ञान और भौतिकवाद में आस्था होते हुये भी आदर्शवाद में भी उनकी आस्था थी और वे एक अदृश्य शक्ति को मानते थे, जिसे कार्लमार्क्स कभी भी मानने को तैयार नहीं था।[18]

उनका विचार था कि ''विज्ञान उन सभी रहस्यों की गुत्थी को नहीं खोल सका है न भविष्य में उससे आशा हे कि वह रहस्य के

सभी पर्दो को उठा देगा।''[19] इसका अर्थ यही नहीं है कि नेहरू ने विज्ञान का रास्ता बिल्कुल छोड़ दिया था। वास्तव में वे विज्ञान ओर अध्यात्मवाद को एक दुसरे के विरोधी नहीं अपितु पूरक मानते थे। उनका मत था कि विज्ञान भी निरन्तर जीवन के रहस्यों की गुत्थियों को खोलने में लगा हुआ है। जिसे हम सत्य की खोज कह सकते है। सत्य की खोज से नेहरू का तात्पर्य ज्ञान, सच्चाई और असलियत की खोज से है। नेहरू का विचार था कि विज्ञान के मैदान में भी इसकी जरूरत पड़ती है। उनका स्पष्ट मत है कि जिन्दा जीवन दर्शन ऐसा होना चाहिये जो आज की समस्याओ का हल पेश कर सके।[20]

इस प्रकार जवाहर लाल नेहरू ने तो उग्र नास्तिक थे न विशुद्ध भौतिकवादी थे। वे आत्मा और परमात्मा जैसे गूढ़ और सूक्ष्म तत्वों के प्रति आकर्षित थे। वे परम्मरागत अर्थो में अध्यात्मवादी भी नहीं थे क्योंकि जैसा हमने देखा कि उन्होने तत्व ज्ञान की सूक्ष्म और जटिल समस्याओं पर उलझने से साफ–साफ इन्कार कर दिया।[21] वे स्थान–स्थान पर अध्यात्मिक शब्द का प्रयोग करते थे परन्तु उनका आध्यात्मिक शब्द नैतिक अथवा मानसिक शब्द का पर्यायवाची था।[22]

क्या मार्क्सवाद ने नेहरू को पूर्णतः संतुष्ट किया? वस्तुतः ऐसी बात नहीं थी।23 नेहरू द्वारा मार्कर्सवाद की मीमांसा अद्वितीय है। उनके समाजवादी विचारों की पृष्ठभूमि मार्क्सवाद है और वे मार्क्सवाद के महानतम अमार्क्सवादी विक्रेता हो गये। फिर भी इस समर्पण के बावजूद वे इसकी सैद्धान्तिक कट्टरता में नही बधें।[24]

नेहरू जी जीवन पर्यन्त समाजवाद के प्रबल पक्षधर बने रहे। अन्तर्राष्ट्रीय रंग मंच पर उन्होंने उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद और फासिस्टवाद का घोर विरोध किया। असंलग्नता आन्दोलन उनके मस्तिष्क की उपज थी। उन्होने लेकतांत्रिक समाजवाद को मूर्त रूप प्रदान किया। उनकी पद्धति भिन्न थी किन्तु उनका लक्ष्य वर्गविहीन समाज था।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. जवाहर लाल नेहरूः इतिहास के महापुरूष, पृ0170
2. वही पृ0172
3. वही, पृ0173
4. जवाहर लाल नेहरू : विश्व इतिहास की झलक, खण्ड पृ0740
5. वहीं, पृ0768
6. एच0जे0 लास्की : कम्युनिस्ट मैनिफिस्टो ए सोशलिस्ट लैण्ड मार्क, उर्द्धत प्रधान वेणुधर, सोशलिस्ट थॉट ऑफ नेहरू, पृ0 105

7. आर0के0 करंजिया : नेहरू की मनोभूमि पृ0 59

8. ईश्वर चन्द्र : एफ्रो एशियन कन्वेन्शन ऑन नेहरू, पृ0103

9. जवाहर लाल नेहरू : विश्व इतिहास की झलक, पृ0 03

10. शशि भूषण : नेहरू और मार्क्सवाद पृ0 91

11. वहीं पृ0 92–93

12. जवाहर लाल नेहरू : हिन्दुस्तान की कहानी, पृ0 36

13. जवाहर लाल नेहरू : मेरी कहानी पृ0 509

14. शशि भूषण नेहरू और मार्क्सवाद पृ0 85

15. वहीं पृ0 86

16 वहीं पृ0 87

17. जवाहर लाल नेहरू : हिन्दुस्तान की कहानी, पृ0 35

18. वहों पृ0 708

19.. वहीं पृ0 709

20. वहीं पृ0 38

21. ज्योति प्रसाद सूद : ''आधुनिक भातीय राजनीति विचार की मुख्य धारायें, पृ0 183

22. वी0पी0 वर्माः आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन, पृ0 363

23. इन्दिरा गाँधी : फॉरवर्ड सलेक्टेड वर्क्स ऑफ जवाहर लाल नेहरू : सेकिन्ड सीरिज (1984)

24. वहीं

ग्राम–बिरहर, जिला–कानपुर से प्रप्त देवी प्रतिमा।